International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 5, Issue 4, April 2018
Website-www.aarf.asia,**Email**:editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

माध्यमिक स्तर की छात्राओं के आत्मप्रत्यय पर उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन

सतीश गावण्डे
शोधार्थी, शिक्षा संकाय
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल

डॉ. आलोक शर्मा
प्राचार्य, आयुषमति कॉलेज ऑफ एजुकेशन, भोपाल

प्रस्तुत शोध पत्र में माध्यमिक स्तर की छात्राओं के आत्मप्रत्यय पर उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। न्यादर्श के रूप में 150 छात्राओं का चयन कर उन पर 'सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी' एवं 'आत्मप्रत्यय प्रश्नावली' का प्रशासन किया गया। प्राप्त परिणामों के अनुसार उच्च एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाली छात्राओं के मध्य शारीरिक, शैक्षिक, नैतिक व समग्र आत्मप्रत्यय में सार्थक अंतर पाया गया जबकि सामाजिक, स्वभावगत एवं बौद्धिक आत्मप्रत्यय में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

किसी भी राष्ट्र के जीवन का मूलाधार उसकी शिक्षा प्रणाली है जो समाज तथा राष्ट्र के जीवन को गति देती है तथा राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण करती है। शिक्षा के द्वारा ही राष्ट्र एवं समाज प्रगति के पथ पर अग्रसर हो पाता है। शिक्षा के द्वारा ही वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास संभव हो पाया है, जिसका प्रभाव हमें मानव जीवन के सभी क्षेत्रों पर स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। वर्तमान समय में जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं एवं सामयिक जीवनशैली हेतु वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास की महत्वपूर्ण भूमिका है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास ने वैश्वीकरण एवं औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया को तीव्र गति प्रदान की है, जिसके फलस्परूप सारा विश्व एक परिवार के समान हो गया है, परंतु वर्तमान समय में वैश्वीकरण एवं सांस्कृतिक अतिक्रमण के प्रभाव से हमारा देश परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है, आज हम भारतीय लोग भी भौतिकतावादी एवं विलासितापूर्ण जीवनशैली को अपना रहे हैं और प्राचीन भारतीय आदर्शों का त्याग कर रहे हैं। भौतिकतावाद, वैश्वीकरण एवं औद्योगिकीकरण के परिणामस्वरूप आज एक तरफ तो बड़े–बड़े भवनों वाली पूर्ण सुविधा युक्त बस्तियॉ बस गई हैं, दूसरी तरफ उन्ही से लगी हुई झुग्गी बस्तियॉ भी बस गई हैं। इस आर्थिक असमानता के कारण समाज में अपराध, भ्रष्टाचार, बेईमानी, शोषण, कुविचार, हिंसा, बलात्कार, धार्मिक कट्टरता जैसी बुराईयॉ पनपते जा रहे हैं एवं सहिष्णुता, ईमानदारी, सदाचार, कर्तव्यनिष्ठा, अहिंसा जैसे सद्गुणों का लोप होता जा रहा है। फलस्वरूप समाज में आर्थिक असमानता आने के कारण नैतिक एवं मानवीय मूल्यों में गिरावट आती जा रही है, जिसका प्रभाव पारिवारिक एवं

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

विद्यालयीन वातावरण पर भी पड़ रहा है। बालकों के चरित्र, व्यक्तित्व एवं नैतिक मूल्यों के निर्माण में परिवार का सामाजिक–आर्थिक स्तर महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अतः बालकों के आत्मप्रत्यय (व्यक्तित्व) विकास में परिवार के सामाजिक–आर्थिक स्तर की महत्वपूर्ण भूमिका होने के कारण विद्यार्थियों के आत्मप्रत्यय पर उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन करना बहुत ही सामयिक प्रतीत हो रहा है। अतः शोधकर्ता ने उपरोक्त सभी बातों को ध्यान में रखते हुए वर्तमान समस्या का चयन शोधकार्य हेतु किया है।

प्रस्तुत शोध से संबंधित पूर्व में भी कुछ शोध कार्य किये गये हैं जैसे – **चौहान, एस.एल. (1982)** ने अपने अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि छात्र तथा छात्राओं के आत्मप्रत्यय में सार्थक अंतर था। **लैंग्नर (1982)** ने अपने अध्ययन में पाया कि माता–पिता द्वारा दोषपूर्ण अनुशासन, जैसे किसी काम को करने पर माता द्वारा प्रेम परंतु पिता द्वारा फटकार मिलने से भी बालकों में अपराधी प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलता है। परिवार का सामाजिक–आर्थिक स्तर किसी भी परिवार के वातावरण के निर्धारण में अहम् भूमिका निभाता है, साथ ही यह वातावरण बालक के व्यक्तित्व एव आत्मप्रत्यय को सापेक्षिक रूप से प्रभावित करता है। **केनर (1985)** ने अपने अध्ययन में पाया कि गरीब परिवार के बच्चों में परिपक्वता, आत्मविश्वास एवं सकारात्मक आत्मप्रत्यय की कमी होती है। **हालिंगशीड एवं रेडलिप (1988)** के अनुसार उच्च वर्ग की अपेक्षा निम्न वर्ग के बालकों में चरित्र विकृति अधिक पाई जाती है। **खरे (1990)** ने अपने अध्ययन में पाया कि जिन परिवारों का आर्थिक स्तर अच्छा होता है, उन परिवारों के अभिभावक बालिकाओं को उच्च शिक्षा की ओर तथा रोजगार पाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। **कल्याणी, देवी टी. एवं माधुरी लता बी. (2004)** ने अपने अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि किशोरावस्था के विद्यार्थियों के आत्मप्रत्यय में लिंग भिन्नता नहीं पाई गई। **डेविड, अलका एवं खान, शमीम (2010)** ने अपने अध्ययन में पाया कि अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि विभिन्न आय वर्ग वाले बालक एवं बालिकाओं के आत्मप्रत्यय में सार्थक अंतर पाया गया तथा बालिकाओं का आत्मप्रत्यय, बालकों की तुलना में उच्च पाया गया। **चौधरी, स्वाती (2011)** ने अपने अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि सामाजिक आर्थिक स्तर विद्यार्थियों के आत्मप्रत्यय को सार्थक रूप से प्रभावित करता है, उच्च सामाजिक व आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों में निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की अपेक्षा बेहतर आत्मप्रत्यय पाया गया। **बागड़े रेखा; डेविड, अल्का एवं करोड़िया, कविता (2011)** ने अपने अध्ययन में पाया कि किशोर व किशोरियों के मध्य आत्मप्रत्यय के क्षेत्रों शारीरिक स्वास्थ्य व आत्मस्वीकृति में सार्थक अंतर नही पाया गया। **चौधरी, स्वाती (2011)** ने अपने अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मप्रत्यय एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर में धनात्मक सहसंबंध पाया गया। **पाठक, रचना (2017)** ने अपने अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के आत्मप्रत्यय के विभिन्न घटकों उपलब्धि, आत्मविश्वास, कार्य अपेक्षा, हीन भावना की अनुभूति, भावनात्मक स्थायित्व में सार्थक अंतर पाया गया तथा शहरी छात्रों में आत्मप्रत्यय के उपलब्धि, आत्मविश्वास, कार्य अपेक्षा घटक ग्रामीण छात्रों की तुलना में उच्च पाए गए जबकि ग्रामीण छात्रों में हीन भावना की अनुभूति, भावनात्मक स्थायित्व घटक शहरी छात्रों की तुलना में उच्च पाए गए।

उद्देश्य :–

माध्यमिक स्तर की छात्राओं के आत्मप्रत्यय (शारीरिक, सामाजिक, स्वभावगत, शैक्षिक, नैतिक, बौद्धिक एवं समग्र) पर उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना :–

माध्यमिक स्तर की छात्राओं के आत्म–प्रत्यय (शारीरिक, सामाजिक, स्वभावगत, शैक्षिक, नैतिक, बौद्धिक एवं समग्र) पर उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

उपकरण :–

1. आत्मप्रत्यय प्रश्नावली – डॉ. राजकुमार सारस्वत
2. सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी – डॉ. आर.पी. वर्मा, डॉ. पी.सी. सक्सेना व डॉ. ऊषा मिश्रा

विधि :–

सर्वप्रथम बैतूल जिले के शहरी क्षेत्र में स्थित माध्यमिक स्तर के चार विद्यालयों की कक्षा दसवीं में अध्ययनरत् 150 छात्राओं का चयन साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा कर उन पर 'सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी' एवं 'आत्मप्रत्यय प्रश्नावली' का प्रशासन किया गया तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी के प्राप्तांकों के आधार पर छात्राओं को उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर समूह में वर्गीकृत कर दोनों समूहों की छात्राओं के आत्म–प्रत्यय प्रश्नावली के प्राप्तांकों की अलग–अलग मॉस्टर शीट तैयार की गई। मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात परीक्षण के द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण किया गया प्राप्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष निकाले गये।

परिणामों का विश्लेषण :–

परिकल्पना : माध्यमिक स्तर की छात्राओं के आत्मप्रत्यय (शारीरिक, सामाजिक, स्वभावगत, शैक्षिक, नैतिक, बौद्धिक एवं समग्र) पर उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

तालिका

माध्यमिक स्तर की छात्राओं के आत्मप्रत्यय पर उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव संबंधी तुलनात्मक परिणाम

आत्मप्रत्यय के घटक	सामाजिक–आर्थिक स्तर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात मान	'पी' मान
शारीरिक	उच्च	83	33.67	4.88	4.61	< 0.01
	निम्न	67	30.22	4.27		
सामाजिक	उच्च	83	32.58	3.87	1.47	> 0.05
	निम्न	67	31.60	4.22		
स्वभावगत	उच्च	83	31.07	4.35	1.66	> 0.05
	निम्न	67	29.97	3.77		
शैक्षिक	उच्च	83	33.53	4.20	2.67	< 0.01
	निम्न	67	35.21	3.51		
नैतिक	उच्च	83	32.31	4.05	3.09	< 0.01
	निम्न	67	30.43	3.40		
बौद्धिक	उच्च	83	32.39	4.22	0.64	> 0.05
	निम्न	67	31.96	3.93		
समग्र	उच्च	83	195.55	15.23	2.62	< 0.01
	निम्न	67	189.39	13.59		

स्वतंत्रता के अंश – 148 0.05, 0.01 स्तर के लिये निधार्रित न्यूनतम मान – 1.98, 2.61

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि उच्च एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाली छात्राओं के मध्य शारीरिक, शैक्षिक, नैतिक व समग्र आत्मप्रत्यय में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर है, क्योंकि इनके लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात के मान क्रमशः 4.61, 2.67, 3.09, 2.62 स्वतंत्रता के अंश 148 पर सार्थकता के 0.01 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 2.61 की अपेक्षाकृत अधिक हैं जबकि उच्च एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाली छात्राओं के मध्य सामाजिक, स्वभावगत एवं बौद्धिक आत्मप्रत्यय में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर नहीं है, क्योंकि इनके लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात के मान क्रमशः 1.47, 1.66, 0.64 स्वतंत्रता के अंश 148 पर सार्थकता के 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 1.98 की अपेक्षाकृत कम हैं।

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि उच्च एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाली छात्राओं के मध्य शारीरिक, शैक्षिक, नैतिक व समग्र आत्मप्रत्यय में सार्थक अंतर पाया गया तथा उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर वाली छात्राओं में शारीरिक, नैतिक व समग्र आत्मप्रत्यय, निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाली छात्राओं से बेहतर पाया गया जबकि निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाली छात्राओं में शैक्षिक आत्मप्रत्यय, उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर वाली छात्राओं से बेहतर पाया गया। उच्च एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाली छात्राओं के मध्य सामाजिक, स्वभावगत एवं बौद्धिक आत्मप्रत्यय में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

अतः उपरोक्त परिणामों के परिप्रेक्ष्य में पूर्व में ली गई परिकल्पना ''माध्यमिक स्तर की छात्राओं के आत्म–प्रत्यय (शारीरिक, सामाजिक, स्वभावगत, शैक्षिक, नैतिक, बौद्धिक एवं समग्र) पर उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा'' आंशिकतः अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष :–

उच्च एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाली छात्राओं के मध्य शारीरिक, शैक्षिक, नैतिक व समग्र आत्मप्रत्यय में सार्थक अंतर पाया गया तथा उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर वाली छात्राओं में शारीरिक, नैतिक व समग्र आत्मप्रत्यय, निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाली छात्राओं से बेहतर पाया गया जबकि निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाली छात्राओं में शैक्षिक आत्मप्रत्यय, उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर वाली छात्राओं से बेहतर पाया गया। उच्च एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर वाली छात्राओं के मध्य सामाजिक, स्वभावगत एवं बौद्धिक आत्मप्रत्यय में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

// संदर्भ ग्रंथ सूची //

1. गुप्ता, एस. पी. (2005) ''सांख्किीय विधियां'', शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद
2. भार्गव, महेश (1997) ''आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन'', हर प्रसाद भार्गव, 4/230 कचहरी घाट, आगरा, ग्यारहवां संस्करण
3. सिंह, अरूण कुमार (2005) ''शिक्षा मनोविज्ञान'', भारती भवन पब्लिशर्स, पटना
4. वालिया, जे.एस. (2005) ''शिक्षा मनोविज्ञान की बुनियादें'', पाल पब्लिशर्स, जालंधर
5. **Banui, Kuotsu (1992)** *A study of the values of college students in Nagalend in relation to there self-concept*, Ph.D. Edu. North-Eastern Hill Univ. In Fifth Survey of Educational research (1988-92) Vol. - II, Pg. No. 1334.

6. **बागड़े, रेखा; डेविड, अलका एंव करोड़िया, कविता (2011)** *किशोर एवं किशोरियों के आत्मप्रत्यय के क्षेत्र (शारीरिक स्वास्थ्य व आत्मस्वीकृति) का तुलनात्मक अध्ययन,* रिसर्च हंट, वाल्यूम – VI, इश्यू IV, दिसम्बर 2011, पृष्ठ क्रमांक 397–371

7. **Chaudhri, Swati (2011)** *To Study of effect of the Self-concept, attitude towards education and socio-economic status on academic achievement of rural and urban senior-secondary students of Bhopal District,* Unpublished Ph.D. Education B.U. Bhopal.

8. **Chaudhri, Swati (2011)** "Study of Effect of Social Status and Ecnomic status on Self-Concept of Senior Secondary Students of Bhopal City", *Research Link - 82, Vol IX (II), Janaury 2011, Pg. No. 129-130*

9. **Chauhan, S.L. (1982)** *Sociometric Correlates of Self-Concept,* Ph.D. Edu., Aagra. U., In Third Servey of Research in Education (1978-1983) Pg. No. 339.

10. **डेविड, अलका एवं खान, शमीम (2010)** *विभिन्न आर्य वर्ग के पारिवारिक वातावरण के पूर्व किशोरावस्था के बालक/बालिकाओं में आत्मप्रत्यय के प्रभाव का अध्ययन,* Research Hunt, Vol - V, Issue VI July-Aug 2010, Pg. No. 67-68.

11. **कल्याणी, देवी टी. एवं माधुरी लता बी. (2004)** ''अनुसूचित जनजाति एवं गैर अनुसूचित जनजाति के किशोरावस्था के विद्यार्थियों के आत्मप्रत्यय का अध्ययन'', *आई.जे.पी.ई. (इंडियन जनरल ऑफ सॉयकोमेट्री एंड एजूकेशन), जनवरी 2004, वाल्यूम 35 (1) पेज नं. 21–25*

12. पाठक, रचना (2017) ''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के आत्मप्रत्यय एवं शैक्षणिक उपलब्धियों का तुलनात्मक अध्ययन'', *परिप्रेक्ष्य–इंडियन जर्नल ऑफ रिसर्च, वॉल्युम 6, इश्यु 1, जनवरी 2017, पेज नम्बर 806–807*